मुखपृष्ठ

साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 35, अप्रैल(द्वितीय), 2018

राम एक विचार का नाम है,राम अमर है, क्योंकि विचार अमर है।

लेखक:पद्मश्री डॉ.गुणवंतभाई शाह

अनुवादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह

रामायण मात्र हिन्दू प्रजा का महाकाव्य नहीं है,वह तो पृथ्वी पर अंकुरित उत्क्रांत मानवता का महाकाव्य है ।राम का हृदयमंथन समग्र मानवजाति का मनोमंथन है ।सीता की व्यथा विश्व की सभी नारियों की व्यथा है ।

आज रामनवमी है। हजारों वर्ष बीत गये फिरभी लोक-हृदय में राम का स्मरण पूरी तीव्रता के साथ होता रहा है। राम समग्र विश्व के महानायक हैं। वे आदर्श महामानव हैं। उनके प्रति आकर्षण कोई भी सरहद स्वीकार नहीं करती।

रामायण का कथामाधुर्य अलौकिक है। चित्रकूट में मन्दाकिनी के तट पर जब राम और भरत के बीच त्याग की जो स्पर्द्धा चल रही थी,तब कैकेयी की मन:स्थिति कैसी थी? राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त कैकेयी के शब्द खुलकर प्रकाशित करते हैं। अयोध्या से भरत अपने गुरुजनों,नगरजनों,माताओं,स्वजनों एवं सेना सहित चित्रकूट के लिए प्रस्थान करते हैं, तब माता कैकेयी भी जुड़ती है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपने प्रबंध काव्य `साकेत' में राम को कैकेयी के शब्द सुनाते हैं। कैकेयी राम से कहती है:

``थूके,मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके
जो कोई कह सके,कहे,क्यों चूके?
छीने न मातृपद किन्तु भरत का मुझसे,
हे राम,दुहाई कहूँ और क्या तुझसे?
युगयुग तक चलती रहे कठोर कहानी-
रघुकुल में भी थी एक अभागिन नारी।''

कैकेयी के शब्द राम के हृदय को आरपार बेध गए। माता के पछतावे का ``विपुल झरना' चित्रकूट में स्रवित होने लगा। राम ने कैकेयी को आश्वस्त करने के लिए जो शब्द कहे,उनमें राम का रामत्व और भरत का भरतत्व प्रभावक रूप से प्रकट होता है। राम ने कैकेयी से कहा:

``सौ बार धन्य वह लाल की माई
जिसने जना है भरत सा भाई।''

राम के मधुर शब्द सुनकर कैकेयी के हृदय का भार कम हुआ। आसपास वनश्री में सर्वत्र शांति व्याप्त थी। राम के गले लगकर कैकेयी रो रही थी। कैकेयी के अश्रु उसके पछतावे को पावन कर रहे थे।

चौदह वर्ष के वनवास के बाद राम अयोध्या वापस लौटते हैं। भरत के गले लगकर राम ने जो शब्द कहे वे भावार्द्र थे। कल्पना कीजिये उस दृश्य की! भरत राम को अयोध्या के राजसिंहासन पर आरूढ़ करके राम के चरणों में आंसु बहा रहा है। राम की आँखें भी बरस रही हैं। राम के चरणों में चौदह चौदह वर्ष से राजसिंहासन पर प्रतिष्ठित हुई पादुका राम और भरत के आंसुओं से भीग रही है तब राम द्वारा भरत से कहे गए शब्द मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियों में बह रही करुणा के रूप में प्रकट हुए हैं।

``मैं वन जाकर हंसा,
किन्तु घर आकर रोया;
खोकर रोये सभी
भरत! मैं पाकर रोया।''

साकेत के सपूत राम चौदह वर्ष बाद वन से वापस लौटे थे। साकेत के सारे युवाओं को ऐसा लगता था कि बंधु राम वापस लौट आये हैं। राजमाताओं को ऐसा लगता था कि दशरथनंदन राम वापस लौटे हैं। साकेत के महाजनों को लगता था कि राजा राम वापस आये हैं। साकेत की स्त्रियों को लगता था कि जानकीनाथ वापस लौटे हैं। कवि कहते हैं –

``राजा होकर गृही,गृही होकर संन्यासी;
प्रकट हुए आदर्श-रूप घट घट के वासी।''

गुजरात के कविश्री **भानुप्रसाद पंड्या** ने रामायण की कथा पर आधारित तीन सोनेट लिखे हैं। उनके सोनेट संग्रह `**शब्दे कोर्याँ शिल्प**' में से मात्र दो पंक्तियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं। राम शबरी के आश्रम में पहुंचते हैं। शबरी के बेर चखकर लक्ष्मण से कहा:

`मने मेवा लागे लखमण! लुख्खा सौ नगरीना,
जरी चाखो बोरा,अम्रतमीठा आ शबरीना।''

(नगर के सारे मेवे मुझे रूखे-सूखे लगते हैं, शबरी के ये अमृत से मीठे बेर लक्ष्मण तनिक चखो तो सही।)

गुरुदेव टागोर ने महाकवि वाल्मीकि की अंत:स्फुरणा की महिमा अपने ढंग से गायी है। हमें महाकवि वाल्मीकि कृत रामायण की प्राप्ति हुई,एतद अर्थ हम सब देवर्षि नारद से उपकृत हैं। कवि वाल्मीकि से आग्रह करते हुए देवर्षि नारद ने कहा कि ``हे कवि! आप महाकाव्य लिखिए।'' वाल्मीकि ने नारद जी से कहा कि `` हे देवर्षि! आप ब्रह्माजी से कहिये कि जो वाणी स्वर्ग से उतरी है,उसे वापस स्वर्ग नहीं ले जाना।'' अबतक देवताओं के स्तोत्रों में देवता को मनुष्य की भूमिका में लाया गया है,पर मैं तो अपने छन्दोगायन में मनुष्य को देवता की भूमिका पर पहूँचाऊँगा।'' बाद में वाल्मीकि ने नारद से पूछा,``भगवंत! आपके तो त्रिभुवन प्रत्यक्ष हैं,तो कहो कि ऐसा कौन नर है-जो ऐसे ऐसे गुणों से संपन्न हो और धरा के दु:खों को जिसने अपने भाल पर मुकुट के गौरव और विनय के साथ धारण किया हो?''जवाब में नारद ने रघुपति राम की बात कही। वाल्मीकि ने कहा,``हाँ,हाँ,उनकी कीर्तिकथा तो मैंने सुनी है,पर अब उनकी सारी कहानी,उनके जीवन की सभी घटनाओं की जानकारी मुझे नहीं है। तो फिर महाकाव्य की रचना कैसे की जाये? कहीं मैं सत्यभ्रष्ट न हो जाऊं,ऐसा डर रहता है।'' नारद ने मुस्कुराते हुए वाल्मीकि को जो उत्तर दिया,उसमें कवि का सवाया सत्य है।'' ऐसा भाव प्रकट करता है। देवर्षि नारद के उस भाव को गुरुदेव ठाकुर के शब्दों में ही मनाएंगे।

``सत्य वही,जो आप कहेंगे।
जो घटित होता है,वह सब सत्य नहीं होता।
हे कवि !
आपकी मनोभूमि ही राम की जन्मभूमि है,
उसे अयोध्या से भी सच्ची समझो।''

(`भाषाओ छंद'काव्य में रवीन्द्रनाथ द्वारा नारदजी के मुख से वाल्मीकि को संबोधित कर कहलाये गए शब्द।)

गुरुदेव के ऐसे भाव को हम तक पहुँचाने का श्रेय गुजरात के विद्वान् साहित्यकार तथा बांगला वांग्मय के मर्मज्ञ ऐसे सद्गत **भोलाभाई पटेल** को जाता है। उनका लेख `**कवि का सत्य सवाया सत्य**' शीर्षक से (परब-१९९८ अगस्त में प्रकाशित हुआ था।)

रामायण मात्र हिन्दू प्रजा का महाकाव्य नहीं है,वह तो पृथ्वी पर अंकुरित उत्क्रांत मानवता का महाकाव्य है। राम का ह्रदयमंथन समग्र मानवजाति का मनोमंथन है। सीता की व्यथा विश्व की सभी नारियों की व्यथा है।

ता.२५,२६,२७ सितम्बर के दरमियान न्युयोर्क के मेनहटन सेंटर में भारतीय साहित्यकारों की संगोष्ठि का उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्रीश्री वाजपेयीजी ने किया था। असम की साहित्यकार इन्दिरा गोस्वामीजी ने रामायण पर संशोधनात्मक ग्रन्थ प्रकट किया है। उनको ज्ञानपीठ एवोर्ड भी मिला है। सुबह नाश्ता करते समय `न्यु योर्कर रामडा ईन नामक होटल में इंदिराजी से कुछ बातचीत हुई थी। इंदिराजी को रामायण पर

शोधकार्य करने की प्रेरणा जहाँगीर के समकालीन मुल्ला मसीही की ओर से मिली थी। मुल्ला मसीही फारसी में कविता लिखते थे और सीतामाता के प्रति बहुत आदर रखते थे। सीता को जो पीड़ा हुई,उसके प्रति गहरी गहरी संवेदना का अनुभव कर उन्होंने सीता के विषय में लिखा था। यह कहने को मन कर रहा है कि रामायण जैसा महाकाव्य किसी कौम या राष्ट्र का नहीं हो सकता। वह तो समग्र मानवता का महाकाव्य है। वाह वाह रामजी!

समझदारी

``आकाश माथे ध्रुव तेज ढोले
एवो तपे छे इतिहासना खोले,
झंखो,जूनो,जीर्ण छता अनस्त,
आ आर्यनी भूमि तणो प्रकाश!

-कविश्री नानालाल

(इस आर्यभूमि का प्रकाश धुंधला है,फीका है,पुराना है तथापि इतिहास की गोद में ऐसा अनस्त तप रहा है जैसे आकाश में ध्रुव तारक प्रकाशपुंज बिखेर रहा हो।)

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें